

मारवाड़ के कोरणा ठिकाने के राजनीतिक इतिहास का विश्लेषणात्मक अध्ययन



डॉ. भगवान सिंह शेखावत

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

मध्यकालीन भारत के इतिहास में स्थानीय रियासतों का प्रमुख स्थान था। जिसमें राजपूताना की मारवाड़ (जोधपुर) मुख्य रियासत थी जिसके विकास में स्थानीय ठिकानों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। ठिकाना व्यवस्था का रियासत के प्रशासन, सैन्य व्यवस्था, आर्थिक प्रबंधन में विशिष्ट स्थान था। मध्यकालीन प्रशासनिक व आर्थिक व्यवस्था का शोध ठिकानों के बिना अपूर्ण है। क्षेत्रीय इतिहास का अनुसंधान अतिआवश्यक है जिस संबंध में अभी तक अल्प कार्य हुआ है। मारवाड़ में राव जोधा ने सर्वप्रथम अपने भाइयों और पुत्रों को भूमि वितरित कर ठिकाना व्यवस्था को प्रारम्भ किया, जिसमें क्रमिक रूप से परिवर्तन होता रहा। मारवाड़ में ठिकानेदारों की मुख्य रूप से राजवी व सरदार दो श्रेणियाँ थी। मारवाड़ में वर्तमान जालौर जिले का एक विशिष्ट क्षेत्र है जिसे “कोरणावटी” के नाम से जाना जाता है जिसका केन्द्र कोरणा था उहड़ राठौड़ों का ठिकाना था। कोरणा के ठिकानेदारों ने मारवाड़ रियासत के सामान्य व सैन्य प्रशासन में अवदान दिया। कोरणा ठिकानेदारों की वंशावली, ठिकाने के प्रशासन, सैन्य सेवा आदि का स्रोत उहड़ राठौड़ा री ख्यात में मिलता है। इसके अतिरिक्त ठिकाने की बहियाँ मुख्य प्राथमिक स्रोत हैं।

संकेताक्षर—ख्यात, उहड़, मुसाहिब, कामदार, रूक्का, कुरब, कोरणावटी

प्रस्तावना

मारवाड़ में ठिकाना व्यवस्था राजनीति, सैन्य व आर्थिक व्यवस्था की मुख्य धुरी रही है। मारवाड़ के शासक राव जोधा ने सर्वप्रथम शासनतंत्र सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए अपने भाइयों व पुत्रों को भूमि वितरित की। राव जोधा ने डावी मिसल में अपने पुत्रों को और जीवणी मिसल में भाइयों को स्थान दिया। राव जोधा ने अपने पुत्रों की अपेक्षा अपने भाइयों को जागीर में कोई बड़ा भू-भाग नहीं दिया परन्तु फिर भी जोधा द्वारा अपनाई गई भूमि वितरण प्रणाली काफी सहायक सिद्ध हुई। राव जोधा के भाई व पुत्र अपने-अपने प्रदेशों में अर्द्ध स्वतंत्र शासक थे। नैतिक दृष्टि से वे शासक की सैनिक सहायता करने के लिए बाध्य थे। कर के रूप में इन्हें कुछ धनराशि राजा को देनी पड़ती थी। मारवाड़ में राठौड़

सामंत प्रारम्भ से ही बड़े शक्तिशाली थे उनका राजा के साथ संबंध भाई-बन्धु का था न की स्वामी और सेवक का। ये सामंत राज्य को पैतृक सम्पत्ति के रूप में मानते थे, सामंत युद्ध में राजा की सहायता करते थे। उसमें भी यह भावना निहित थी कि वह अपने पैतृक सम्पत्ति की सामूहिक रूप से रक्षा करने हेतु ऐसा कर रहे हैं। कालांतर में राव जोधा द्वारा नियुक्त सामंत बड़े शक्तिशाली हो गये थे कभी-कभी तो सामंत शासक निर्माता की भूमिका भी अदा करने लगे। सबसे पहले सवाई राजा सूरसिंह के समय मिसल का गठन हुआ जिनकी संख्या 8 थी जिनमें बगड़ी, आऊवा, आसोप, कानाना, रिया, रायपुर, खेरवा, खिंवर प्रमुख रूप से थे। महाराजा सूरसिंह के काल में मारवाड़ में मुगल शासन पद्धति का अनुसरण हुआ, जिससे सामंत प्रथा में भी परिवर्तन आया। सर्वप्रथम

मारवाड़ के राठौड़ नरेशों को उनके वंश के ठाकुरों के बीच भाई-बन्धु का संबंध चला आ रहा था लेकिन उसके बाद मुगल प्रणाली के अनुसार इनका संबंध स्वामी और सेवक का हो गया। मध्यकाल में रियासत शासक व ठिकानेदारों के मध्य का संबंध शासक की योग्यता, उसके प्रशासनिक नियंत्रण व केन्द्रीय सत्ता से उसके संबंध तथा ठिकानेदार की महत्वाकांक्षा आदि कई बातों पर निर्भर करती थी। ठिकाने की कुल रेख व गाँवों की संख्या निश्चित नहीं थी इनमें घटत, बढ़त होती रहती थी। खुमाण सिंह कृत मारवाड़ जागीर रहस्य के अनुसार मारवाड़ में कुल पट्टेदारों की संख्या 2409 थी जिनमें से 1529 जागीरदार 590 सासनदार और 290 भूमिचारा के थे। जागीरदारों से सालाना रियासत को रेख चाकरी इत्यादि के रूप में 507856 रुपये प्राप्त होते थे। इन जागीरदारों में से 294 को पुश्तैनी रूप से ताजीम का सम्मान प्राप्त था। ठिकाना व्यवस्था ने प्रशासनिक दृष्टि से रियासत को गतिशील बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान तो दिया ही इसके साथ ही ठिकानेदारों द्वारा महत्वपूर्ण सैन्य अभियानों के समय रियासत को दिया गया सैन्य सहयोग उल्लेखनीय था। आर्थिक आधार पर ठिकानेदारों द्वारा रियासत को दिये गए कर राशि आर्थिक दृष्टि से रियासत को सशक्त बनाती थी व ठिकाना शासन व्यवस्था से रियासत के शासक को निश्चितता प्रदान करती थी। वस्तुतः ठिकाना व्यवस्था मध्यकालीन राजस्थान में मारवाड़ ही नहीं अपितु जयपुर, बीकानेर, मेवाड़ आदि रियासतों की प्रशासनिक धुरी थी जिस कारण ही राजपूताना की रियासतों कि राष्ट्रीय राजनीति में विशिष्ट स्थान था। मारवाड़ में ठिकानेदारों की मुख्य रूप से दो श्रेणियाँ थी—

1. राजवी

2. सरदार

राजा के छोटे भाई व निकट के संबंधी जिन्हें जागीर दी जाती थी वे राजवी कहलाते थे। इन्हें रेख, चाकरी हुक्मनामा आदि रकम राजकोष में जमा करानी पड़ती थी। वहीं सरदार ठिकानेदारों की चार उप-श्रेणियाँ थीं—

(अ) सिरामत

(ब) ताजीमी

(स) गनायत

(द) मुत्सद्दी

मारवाड़ में उहड़ वंशज राजपूतों के 3 ठिकाने थे जो इस प्रकार थे—

(अ) कड़लू

(ब) कोरणा

(स) रेवतड़ा

जोधपुर राज्य के ठिकानों में कोरणा ठिकाने का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह ठिकाना उहड़ राठौड़ों के पट्टे में रहा। राठौड़ों की प्राचीन शाखाओं में “उहड़” गौत्र का विशेष स्थान रहा है। राव सीहा मारवाड़ राठौड़ों के मूल पुरुष माने गये हैं। उनके पुत्र राव आस्थान को 1300 ई. के लगभग खेड़ पर अधिकार करने का सौभाग्य मिला। राव आस्थान के पौत्र एवं जोपसा के पुत्र उहड़ से उहड़ शाखा का प्रादुर्भाव हुआ। उहड़ योद्धाओं ने जहाँ सैनिक अभियानों में अग्रणी रहकर रणकुशलता का परिचय दिया वहीं मारवाड़ में राठौड़ों का राज्य स्थापित करने में उनकी विशेष भूमिका रही।¹

उहड़ उमर कोट के सोढा पंवारों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उहड़ के उत्तराधिकारी मोहणसी हुए। मोहणसी के बाद क्रमशः अजैसी, घादड़जी, मालदे, तोलोजी और सोहड़पाल कोरणा की गद्दी पर बैठे। सोहड़पाल का उत्तराधिकारी मेड़ा हुआ। मेड़ा उहड़ की मृत्यु होने पर उसका पुत्र दैवकरण वि.सं. 1496 में कोरणा की गद्दी पर बैठा। दैवकरण का उत्तराधिकारी खैतपाल हुआ। खैतपाल के पश्चात् उसका पुत्र काजौ कोरणा की गद्दी पर बैठा।² उसकी मृत्यु के बाद नैतसी उत्तराधिकारी हुआ। नैतसी उहड़ के पश्चात् जैमल उत्तराधिकारी हुआ। जैमल उहड़ का उत्तराधिकारी गोपालदास हुआ। उक्त वृत्तांत “उहड़ राठौड़ों की ख्यात” में मिलता है। इसमें कोरणा ठिकाने के ठाकुरों के पुत्रों से जो शाखाएं अंकुरित हुई उसकी वंशावलियाँ भी दी गई हैं।

कोरणा ठिकाने की बहियाँ राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी में संग्रहीत हैं। इन बहियों में ठिकाने के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इस ठिकाने की शासन प्रणाली, ठिकाने में सेवाएँ देने वाले पदाधिकारी ठिकानेदार और प्रजा का आपसी सम्बन्ध, ठिकाने द्वारा जारी होने वाले पट्टे-परवाने, रूक्के आदि अनेकानेक सूचनाएँ इन बहियों में मिलती हैं।

ठिकाने की प्रशासनिक व्यवस्था को चलाने के लिए प्रधान पद के अलावा मुसाहिब, कामदार, फौजदार, वकील, साणी, दरोगा, कोठारी, तहसीलदार आदि कर्मचारियों की नियुक्ति आवश्यकता व क्षमतानुसार की जाती थी। कामदार का कार्य वित्त व राजस्व सम्बन्धी कार्यों को करना होता था।³ वकील शासक और ठिकानेदार के मध्य एक कड़ी का कार्य करता था। कणवारिये का कार्य ठिकाने के अधीनस्थ गाँवों में फसल की देखरेख व किसानों पर अंकुश रखना होता था। कोठारी का कार्य ठिकाने में खाने-पीने की वस्तुओं के कोठार की देखरेख करने से था। फौजदार का कार्य जागीर सुरक्षा तथा स्थानीय सेना पर नियन्त्रण रखना होता था। ठिकाने के महल की रखवाली के लिए सुरक्षाकर्मियों की नियुक्ति भी की जाती थी। उक्त सभी कर्मचारी ठिकाने के स्तम्भ माने जाते थे।

ठिकानेदार को राज्य के साथ मधुर सम्बन्ध रखने पड़ते थे। राज्यादेश के अनुसार उसे हर कार्य में हाजिर होना पड़ता था। ठिकाने की रेख के अनुसार उसे राज्य के युद्ध अभियानों में भाग लेने हेतु अपनी सैनिक व्यवस्था रखनी पड़ती थी। ठिकाने की आय का निर्धारित हिस्सा ठिकानेदार को राज्य में चुकाना होता था। राज्य की ओर से ठिकानेदारों को पद भी दिये जाते थे। उस पद पर रहते हुए ठिकानेदार को निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ काम करना अनिवार्य था। राज्य की ओर से ठिकानेदारों के कुरब-कायदे भी हुआ करते थे। सराहनीय कार्य करने, युद्ध में वीरता दिखाने आदि के उपलक्ष्य में उन्हें राज्य की ओर से सम्मानित भी किया जाता था। हाथी सिरोपाव, पालकी सिरोपाव आदि देकर उनका मान बढ़ाया जाता था। ठिकानेदार का कर्तव्य था कि वह राज्य के साथ मधुर राजनीतिक सम्बन्ध रखे। यही कारण है कि कोरणा ठिकानेदारों ने मारवाड़ राज्य के साथ हमेशा मधुर राजनीतिक सम्बन्ध बनाये रखे। समय-समय पर उन्होंने राज्य को अपनी सेवाएँ दीं।

कोरणा ठिकानेदारों का मारवाड़ राज्य के युद्ध अभियानों में भाग लेने का विवरण उहड़ राठौड़ों की ख्यात में मिलता है। कोरणा के ठिकानेदार नैतसी ने राव मालदेव एवं बादशाह शेरशाह के मध्य लड़े गये सुमेल गिरी (1544 ई.) के युद्ध में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की, यथा—“माहाराज राव मालदेजी रै उपर

वीरभदे दूदावत सैरसा री फौज लैनै आयौ नै समत 1600 रा माहा सुद 12 नै झगड़ौ हुवौ जीण मैं राठौड़ नैतसीजी राव मालदेजी ने दोय कोस पुगाय नै साथै भाई भीवसिंघजी नै मैलीया नै नैतसीजी पाछा आपनै काम आया।⁴

जब जैसलमेर के शासक महारावल भीवसिंह की सेना ने कोरणा ठिकाने पर हमला किया उसमें ठाकुर गोपालसिंह कोरणा की रक्षार्थ काम आये। उहड़ राठौड़ों की ख्यात में यह उल्लेख इस प्रकार आया है, यथा—

“महाराज श्री सुदसिंघ जी नै भाटी गोयंददासजी मानावता सिकार रमता-रमता कोरणै आया तैरै गोपाल दासजी गोठ दीनी नै भाटी गोपददासजी घोड़ों मोल मांगीयो सो दीयो नहीं। तीण सु पाछा जोधपुर जाय नै उंधी पाधरी भीड़ाई। उठा सुं जैसलमेर जायनै महारावल भीवसिंघजी नै सीषाया सौ रावळजी मोको दैषता हीज हा जीतैरै भाटी आपनै कोरणै रै पटै रा ऊंट लै गया तैरै कंवर भोपतजी उरजणसिंघजी नै भीवसिंघजी लारै वाहर गया सो गांव लहुवा रो थांगोबाळ थांणायत नै पकड़ नै लै आया सो कोरणै लाय कैद कर दिया सो माथै डंड करनै तेरे मास सुं छोडीया तैरै जैसलमेर जायनै कूकिया। तैरै रावळ भीवसिंघजी पांच हजार फोज दै नै कंवर नाथूसिंघजी नै नै भाई कीलांण सिंघजी नै मारवाड़ माथै वीदा किया नै पोकरण सुं दोय हजार लौक वीदा करायौ सो बालैसर आय भेळा हुवा नै अठिनै राठौड़ गोपाळदासजी तो जोधपुर गढ उपर गोपाळ पोळ डैरो हो नै कंवर कोरणै हा सो कटक री षबर लागी तैरै कोरणै रै कोट मै दोय हजार आदमी भैळा करनै संभोया जीणां मै गया आदमीयां रा नांव कोट मै था ठाकरां सारै बनै था सो छूट गंगावै आयनै दोय हजार तौ आथूणा फंटीया नै दोय हजार उगवणां फंटीया नै तीन हजार लारली पोर रा रात थकां कटक आय कोरणौ घेरीयौ नै बोली तो गांव गयो हो नै ढोलण सुवै में सुती ही सो भाषर चढनै ढोल बजायौ सो जोधपुर सुणीयौ तैरै ठाकुर गोपाळदासजी जीण वगत सैवा करता हा सौ सेवा करनै चडीया सो तीसरा पोर रा पराळीया री चापर माथै कोटवाळां आवता देषीया नै प्रधान दैवड़ा दोय भाई बारै बरसां रा अण बोलणा हा सो उण री मां डोकरी रा कैण सूं भैळा बैठ ने दही रोटी षाय कोट मै आया नै कटक री कोठी कुंपाहर माथै ही

सो ठाकसा पाघरा कोठी माथै गया वीगत—

4 काजावत इण झगड़ा मै कांम आया

1 ठाकर गोपाळदास जी जैमलोत

1 कंवर भोपतजी गोपाळदासोत

1 राठोड़ माधोसिंह रतन सिंघोत

1 राठोड़ तैजसिंह जैतसिंघोत⁵

इस युद्ध में कोरणा की तरफ से लड़ते हुए कई राठोड़ वीर गति को प्राप्त हुए।

जोधपुर के शासकों ने समय-समय पर उहड़ राठोड़ों को उनकी बंदगी के बदले गाँवों के पट्टे भी इनायत किये। महाराजा अजीतसिंह द्वारा प्रदत्त उहड़ राठोड़ों के गाँवों के पट्टों का विवरण उहड़ राठोड़ों की ख्यात में इस प्रकार आया है, यथा—

“महाराज श्री अजीतसिंह साहेब विखा सूं पधार नै जोधपुर रै गढ चडीया जटा पछै खांप उहड़ा रै पटा लिखीजीया जीणां में आठ दस पटां री नकलां भैरजी जोधपुर सूं लाया जीणां री नकलां -

1 पटो 1 रा. हरीदास, भगवानदास, सुंदरदास, उरजणसिंह, गोपालदास, जैमल, नैतसी, काजाखरहत, दैवकरण, मैडा, सोहड़पाल, तोला, मालदे, धारड़, अजैसी, बीजेसी, मोहणसी, उहड़, जोपसा, राव आसधानोत रा नु समत 1765 रा आसोज वद 10 साख सावणु था पटो लीखीजीयो। 12000/-33 प्रगने जोधपुर तफै कोढणा रा गांव

2500/ कोरणोवास	2500/ 2 गांव गंगावोवास 2
125/ चांदेई वास 1	31211/ गांव गुवालनडोवास 1
375/ गांव ढांढणीयो	625/ गांव जासती
650/ आसराबो वडो	500/ गांव हीगोलोवडोवास 2
125/ राबड़ीयो बडो	500/ गांव चीचडली गांव 1
250/ गांव सोनगरी	500/ गांव परालीयो
125/ कानागोदारावास 4	375/ गांव बावलीवास 4
125/ गांव खींपलो	250/ गांव वांकीयावास
500 नागाणो वडो	375/ गांव सोईतरो
250 गांव वाणीयावास	125/ गांव दीपा बैरी
375 गांव मीडीथली 4	125/ गांव भांडुरवास 4

36211/ पतासर बगनावस

1200/33 गांव तैतीस तागीरायत रा भगानदास सुंदरदासोत खांप उहड़ री आ तागीरायत आगली वाजे है।⁶

कोरणा ठिकाने में आसामियों के नाम रूक्के एवं इकरारनामे जारी होते थे। उनकी नकलें बहियों में दर्ज होती थी। रूक्के और इकरारनामे कृषि व्यवसाय से जुड़े हुए थे जिनमें ठिकाने के खेत जोतने, फसल लेकर उसका अनाज ठिकाने में पहुँचाने एवं अन्य कार्यों के जारी होते थे।

वि.सं. 2007 की “रूका इकरारनामा खाता बही” में यह वर्णित है कि खेत ठिकाने की ओर से जोत दिया गया है और उसकी फसल पैदा कर अनाज ठिकाने में पहुँचाने का कार्य किसानों को करना है इसके बदले किसानों को अनाज के तीन हिस्सों में से दो हिस्सा दिया जाएगा। एक हिस्सा ठिकाने का होगा, यथा—

“तेहरी रो रूको 1 लीख दीयो मेमुसमी खीवड़ा बेटा वीरदा रो जात रा मुढण वा।। गंगावे वाळा लीख दीना ठाकुर श्री कोरणा री सिरकार में लीख दीनो कै ठीकाणा से पटा रो गांव गंगावा री सीम उनांम रो खेत 1 जीसमें ठिकाणे री घरू कास्त उनांम वाळा खेत में इण साल कास्त ठीकाणा री थी तका में खेती अंवेरण वास्ते सेवगां वाळी पाट माही तो मने दीनी है ने आधी पाट मुढण भाना ने दीनी तका अवेरण वायो है 1/3 सूं दीनी है सो साख अवेरने लाटो लेय ने धान वंटाय ढीगली रे तीन मांय सूं ऐक ढगली श्री रावळे पुगाय देसू ने ढीगली दोय मारे घरे लीजाव सूं इण में कोई तरे रो फरक आवे नहीं साख सांवणू अवेरने आ पाटा ने दखल कर ठीकाणा में सुपरत कर देसू मारे आ पाट खातेदारी रो कोई उजर नहीं आ पाट सीरफ सावणू धान अवेरण वास्ते मने श्री रावळे सूं दीनी है सो साख अंवेरियां रे बाद मारो कोई हक नहीं है। (2006 रा आसोज वद 2 द।। खीवड़ो)”⁷

निष्कर्ष

वस्तुतः कोरणा ठिकाने का जोधपुर राज्य के ठिकानों में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह ठिकाना उहड़ राठोड़ों के अधीन रहा, जिन्होंने मारवाड़ राज्य के निर्माण और उसकी सुदृढ़ता में अभूतपूर्व योगदान दिया। उहड़ राठोड़ों ने न केवल रणभूमि में वीरता का परिचय दिया बल्कि प्रशासनिक

व्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करने में भी अग्रणी भूमिका निभाई। कोरणा ठिकाने के प्रशासन में कुशल पदाधिकारियों की नियुक्ति, ठिकानेदारों की निष्ठा और राज्य के साथ मधुर संबंधों ने इसे विशिष्ट बनाया। ठिकानेदारों ने समय-समय पर युद्ध अभियानों में भाग लेकर अपनी वीरता का प्रदर्शन किया और राज्य से सम्मान प्राप्त किया। ठिकाने की बहियाँ, जिनमें प्रशासनिक, राजनीतिक, और सामाजिक विवरण दर्ज हैं, ठिकाने के इतिहास को उजागर करती हैं। कोरणा ठिकाने ने कृषि और राजस्व व्यवस्था को सुव्यवस्थित किया, जिसके माध्यम से प्रजा और राज्य के बीच बेहतर संबंध स्थापित हुए। संपूर्ण इतिहास इस बात का प्रमाण है कि कोरणा ठिकाना न केवल मारवाड़ राज्य के लिए सामरिक और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि उसकी सांस्कृतिक और प्रशासनिक विरासत भी गौरवशाली रही।

संदर्भ सूची

- भाटी, डॉ. हुकमसिंह, उहड़ राठौड़ां री ख्यात, सम्पादकीय, पृ.सं. अ
- उपरोक्त, पृ.सं. 1-10
- भाटी, डॉ. विक्रमसिंह, मध्यकालीन राजस्थान में ठिकाना व्यवस्था, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2004, पृ.सं. 143-144
- भाटी, डॉ. हुकमसिंह, पूर्वोक्त, पृ.सं. 23
- उपरोक्त, पृ.सं. 38-39
- उपरोक्त, पृ.सं. 196-197
- भाटी, डॉ. विक्रमसिंह, मारवाड़ के प्रमुख ठिकानों की ऐतिहासिक बहियों का सर्वेक्षण, राजस्थानी शोध संस्थान एवं मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर प्रथम संस्करण-2021, पृ.सं. 98